विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 45 : नई दिल्ली : 1-7 फरवरी 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए तिरुपुर पधार गए हैं। तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा के दौरान भाषायी भेद के बावजूद तमिल लोगों में अहिंसा यात्रा का प्रभाव स्पष्ट देखने को मिला। आचार्यप्रवर ६ फरवरी को कोयम्बत्तूर पधारेंगे, वहां पूज्यप्रवर का १७ फरवरी तक का प्रवास पूर्व निर्धारित है। कोयम्बत्तूरवासी १५५वें मर्यादा महोत्सव की तैयारियों को अंतिम रूप देने में निष्ठा के साथ जुटे हुए हैं। पूज्यप्रवर २० फरवरी को केरल की सीमा में प्रवेश करेंगे, ऐसी संभावना है। अहिंसा यात्रा के इस सोलहवें राज्य में पूज्यप्रवर की करीब एक माह की यात्रा निर्धारित है। तत्पश्चात् आचार्यप्रवर २० मार्च को पुनः तमिलनाडु में पधार जाएंगे। आचार्यप्रवर का २५-२६ मार्च का प्रवास भारत के अंतिम छोर पर स्थित कन्याकुमारी में होगा।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

कर्मों के दरबार में देर भले, अंधेर नहीं

२१ जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः तिरुचेनदुरै से पेट्टावेथलाई की ओर प्रस्थान किया। तिरुचेनदुरै के ग्राम्यजन मार्ग में आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। आज भी प्रायः पूरा विहार कावेरी नदी के किनारे-किनारे ही हुआ। आसपास दिखाई दे रहे नारियल, केलों आदि के हजारों वृक्षों से हरा-भरा बना यह क्षेत्र राहगीरों की थकान को हरने में सक्षम प्रतीत हुआ। आज मौसम भी सुहावना रूप धारण किए हुए था। आकाश मार्ग में विहरण कर रहे बादल सूर्य के आतप को अवरुद्ध किए हुए थे तो कावेरी नदी के जल के कारण हवा में हल्की ठंडक का अहसास था। अत्यधिक यातायात ने इस मार्ग की रमणीयता, शांति, स्वच्छता तथा हवा की शुद्धता को मानों लील लिया है, अन्यथा यह क्षेत्र प्रकृति प्रेमियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र भी बन सकता था।

'तिरचीमाडला' के कई ग्रामीणों ने अपने-अपने घरों के समीप पूज्यप्रवर को वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर करीब १२.३ कि.मी. का विहार कर पेट्टावेथलाई में स्थित रत्ना हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मुख्य द्वार पर प्रधानाध्यापिका श्रीमती सी. कृतिका तथा अन्य शिक्षकों आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

पूज्यप्रवर के विद्यालय में पदार्पण से पूर्व ही सैंकड़ों विद्यार्थी प्रतीक्षा में बैठे थे। आज उनकी परीक्षा थी। इसलिए आचार्यप्रवर ने प्रातराश से पूर्व ही उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। छात्र-छात्राएं व शिक्षकवर्ग ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'धार्मिक और दार्शनिक जगत का एक सिद्धांत है-कर्मवाद। यह आत्मवाद से जुड़ा हुआ सिद्धांत है। प्राणी जैसा आचरण करता है, उसके अनुसार उसे फल भी मिलता है। कर्मवाद एक ऐसा सिद्धांत है, जिसके अनुसार न्याय होता है। कर्मों की दुनिया में भ्रष्टाचार, प्रलोभन आदि कुछ नहीं चलता, सबको न्याय मिलता है। आदमी को इस कर्मवाद के सिद्धांत पर मनन करना चाहिए।

कोई आदमी आज सुख-सुविधा भोग रहा है तो इसका अर्थ है कि उसने पूर्व में सुकृत किया है। इसी प्रकार कोई आदमी दुःख भोग रहा है तो इसका अर्थ है कि उसने पूर्व में पापाचरण किया है। पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों का फल इस जन्म में भी मिल सकता है। इस जन्म में भले पाप न किए हों, किन्तु पूर्व जन्मों में किए गए पाप के कारण भी आदमी को दुःख भोगना पड़ सकता है। कर्मों को भोगे बिना उनसे छुटकारा नहीं मिलता। तपस्या के द्वारा भी कई कर्मों को निर्जीर्ण किया जा सकता है।

आदमी को अपने जीवन में किसी का बुरा नहीं करना चाहिए। कर्मों के दरबार में देर (अबाधाकाल के नियमानुसार) तो हो सकती है, किन्तु अंधेर नहीं होता। इसलिए आदमी को बुरे आचरणों से बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

विरोधियों के प्रति भी रहे मंगल मैत्री भाव

२२ जनवरी। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः पेट्टावेथलाई से कुलीथलै की ओर प्रस्थित हुए। मार्गस्थ पेटवापडाई के ग्रामवासियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। कावेरी नदी के परिपार्श्व में शांतिदूत आचार्यप्रवर के नेतृत्व में गतिमान अहिंसा यात्रा की अमल-धवल धारा हरी-भरी वृक्षावली के बीच और भी शोभायमान हो रही थी। मार्ग के आसपास नारियल, केले और नीलगिरी के वृक्षों की तो मानों भरमार थी। वाहनों के कोलाहल के कारण कावेरी नदी के जल का कलकल कहीं-कहीं ही सुनाई दे रहा था।

परमाराध्य आचार्यप्रवर लगभग ७.७ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर कुलिथलै स्थित सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर के पदार्पण से अभिभूत विद्यालय के ऑनर श्री गौतम ने विद्यालय से संबंधित अन्य लोगों के साथ पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'सोलह अनुप्रेक्षाएं बताई गई हैं। उनमें तेरहवीं है--मैत्री अनुप्रेक्षा। सभी प्राणियों के प्रति मैत्री की भावना रहनी चाहिए। मैत्री हिंसा का विरोधी तत्त्व है। जहां हिंसा है, वहां मैत्री नहीं रह सकती और जहां मैत्री है, वहां हिंसा नहीं हो सकती। दूसरों का हित चिन्तन मैत्री होती है। जिस आदमी का चित्त मैत्री की भावना से भावित हो जाता है, वह हिंसा की भावना से उपरत हो जाता है। आदमी को यह भावना करनी चाहिए कि सभी कल्याण को प्राप्त करें, शांति को प्राप्त करें।

सामने वाला व्यक्ति गुस्सा भी करे तो आदमी को शांति रखने का प्रयास करना चाहिए। एक व्यक्ति मैत्री का प्रयोग करता है तो दूसरे के मन पर भी उसका प्रभाव पड़ सकता है। विरोधी लोगों के प्रति मंगल भावना रखनी चाहिए। आदमी अपने चित्त को मैत्री भावना से भावित रखे, यह काम्य है।'

विद्यालय के ऑनर श्री गौतम आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित थे। वे मध्याह्न में अपने परिवार को भी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ लाए और मंगल आशीष प्राप्त की।

वटवृक्षों की छाया में गुरुकुल की स्मृति

२३ जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कुलीथलै से लालपेट की ओर प्रस्थान किया। सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल के ऑनर श्री गौतम पूज्यप्रवर के विहार से पूर्व ही अपने विद्यालय में पहुंच गए। उन्होंने पूज्यप्रवर को वंदन कर श्रीचरणों में अपने कृतज्ञ भाव अर्पित किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की।

गत रात्रि में पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल से कुछ ही दूरी पर स्थित सच्चिदानंद आश्रम संस्थानम के प्रमुख

श्री दौरतिकजी आदि कई व्यक्ति पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। उन्होंने पूज्यप्रवर से आश्रम परिसर में पधारने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर आज प्रातः राष्ट्रीय राजमार्ग के उस पार स्थित उस आश्रम में पधारे। आश्रम के प्रमुख श्री दौरतिकजी ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आश्रम में उस समय प्रार्थना का क्रम चल रहा था, इसलिए पूज्यप्रवर प्रार्थना हॉल के बाहर से लौट गए। श्री दौरतिकजी ने बताया कि आश्रम में इस समय आठ विदेशी साधक भी निवास कर रहे हैं। आचार्यप्रवर ने आश्रम के लिए मंगल भावयुक्त प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'आश्रम में आध्यात्मिक साधना का क्रम अच्छे रूप में चलता रहे।'

कावेरी नदी के तीर पर स्थित आज का विहार पथ के आसपास भी हजारों सघन वृक्षों के कारण प्राकृतिक रमणीयता लिए हुए था। नारियल, केला, नीलगिरी, नीम आदि के हरे-भरे सघन वृक्ष कावेरी नदी से प्रभावित प्रतीत हुए। मार्ग के परिपार्श्वस्थ खेतों में यत्र-तत्र विहरण कर रहे मोर राहगीरों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे तो साधु-साध्वियां उन्हें देखकर लाडनूं में स्थित जैन विश्व भारती के परिसर की स्मृति कर रहे थे। करीब १२ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर लालपेट में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

विद्यालय के मैदान में कई वट वृक्ष हैं। उनकी सघन छाया आज प्रवचन पंडाल का कार्य कर रही थीं। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में समुपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा-- 'विद्यार्थियों को चार बातों का ध्यान रखना चाहिए--

१. चोरी से बचें।
२. यथासंभव झूठ से बचें।
३. ज्यादा गुस्सा न करें।
४. नशामुक्त रहें।

आचार्यप्रवर के ससंकेत पूछने पर विद्यार्थियों ने सोत्साह चारों बातें दोहराईं। वृक्षों की छाया में पूज्यप्रवर द्वारा इस प्रकार छात्र-छात्राओं को संबोधित करना और विद्यार्थियों द्वारा पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त शिक्षा को समूहबद्ध रूप में दोहराना प्राचीन गुरुकुल को स्मृति में ला रहा था।

पूज्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'सुखी बनने के लिए अनेक सूत्र हैं--

१. अपने आपको तपाना- आदमी को कुछ कठोर जीवन जीने का अभ्यास रखना चाहिए। कुछ कष्टों को झेलने की मानसिकता तैयार रहनी चाहिए। जो थोड़े से कष्टों को नहीं झेल सकता है, वह दुःखी हो सकता है। सर्दी, गर्मी आदि कठिनाइयों को झेलने का अभ्यासी रहना चाहिए। कठिनाइयों को झेलने का अभ्यासी व्यक्ति सुखी रह सकता है। अपेक्षित विश्राम तो शरीर के लिए आवश्यक हो सकता है, किन्तु आलस्यवश अनपेक्षित पड़े नहीं रहना चाहिए। संस्कृत श्लोक के अनुसार आलस्य मनुष्यों का महान शत्रु होता है और परिश्रम के समान कोई भाई नहीं होता। अपने आप को तपाने के लिए सुकुमारता अर्थात् आरामतलबी की वृत्ति को त्यागना होता है। परिश्रम से प्राप्त चीज का अधिक महत्त्व होता है।
२. कामनाओं का अतिक्रमण। भौतिक लालसाओं, कामनाओं का अतिक्रमण करने वाला व्यक्ति दुःख को भी अतिक्रान्त कर लेता है।
३. द्वेष का क्षरण। आदमी को किसी के प्रति द्वेष और ईर्ष्या का भाव नहीं रखना चाहिए।
४. रागात्मक चेतना का निराकरण।

दूसरों को सुखी देखकर आदमी को दुःखी नहीं बनना चाहिए और दूसरों को दुःखी देखकर आदमी को सुखी नहीं बनना चाहिए। दूसरों के गुणों के प्रति प्रमोद भाव रखना चाहिए और उन गुणों को ग्रहण करने

का प्रयत्न भी करना चाहिए। गुणों से आदमी सज्जन और दुर्गुणों से दुर्जन बनता है।

विद्यालय में दिव्यांग बच्चों को प्रवचन के पश्चात् पूज्यप्रवर का आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। आचार्यप्रवर ने उन्हें भी पावन प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर के पदार्पण से विद्यालय परिसर में उत्सव का-सा माहौल था। आज दिन में कई बार विद्यार्थियों के झुण्ड आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचे। छात्र-छात्राओं में आचार्यप्रवर से पावन आशीष प्राप्त करने की होड़-सी मची हुई थी। कई विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर से अपनी जिज्ञासा का समाधान भी प्राप्त किया। जैन साधुओं की कठोर चर्या को देखकर, सुनकर और जानकर छात्र-छात्राएं ही नहीं, शिक्षक भी आश्चर्यचकित थे।

विद्यार्थी छुट्टी के बाद ज्यों-ज्यों घर पहुंचकर अपने अभिभावकों को आचार्यप्रवर और अहिंसा यात्रा के विषय में बता रहे थे, लोग उत्सुकता और श्रद्धा के साथ विद्यालय परिसर में पहुंच रहे थे और पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर मंगल आशीर्वाद ग्रहण कर रहे थे। इस प्रकार सैंकड़ों ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

रक्षा कवच है दया

२४ जनवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः लालपेट से मायनूर की ओर प्रस्थान किया। विद्यालय के आसपास लालपेट के सैंकड़ों ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन की ललक लिए उपस्थित थे। पूज्यप्रवर के निकट पधारते ही उन्होंने आचार्यप्रवर को सादर सविनय वंदन किया। आचार्यप्रवर ने अपने दोनों कर कमलों से उन पर आशीषवृष्टि करते हुए उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की। मार्गस्थ महादानपुरम के ग्राम्यजनों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। महादानपुरम में स्थित 'सिंगेरी शारदा पीठम' के प्रबन्धक श्री शंकरनारायण ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। कृष्णारायपुरम में यत्र-तत्र खड़े ग्रामीण दर्शनार्थियों को भी पूज्यप्रवर ने पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

एक महिला को आचार्यप्रवर के पधारने की जानकारी हुई तो वह द्रुतगति से घर के बाहर पहुंची। उसके हाथ में आचार्यप्रवर को भेंट करने के लिए कुछ रुपए थे, किन्तु पूज्यप्रवर कुछ आगे पधार चुके थे। इसलिए उसने पीछे चल रहे संतों से उन रुपयों को स्वीकार करने का अनुरोध किया। उस महिला को तमिल भाषा में साधुचर्या की अवगति दी गई। वह रोने लग गई और रोते हुए बोली--'मेरे बाहर आने में थोड़ा विलम्ब हो गया। मुझे गुरुजी का आशीर्वाद नहीं मिला।'

विहार के दौरान थीरुकमदुल्लीउर और मायानूर के ग्रामवासियों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर मिला। नारियल, केलों आदि की प्रचुरता आज के विहार पथ के आसपास भी गत कुछ दिनों की भांति थी। विभिन्न वृक्षों पर खिले रंग-बिरंगे फूल हरितिमा के बीच में और भी मनहर प्रतीत हो रहे थे। 'तंगलमली' के पीले 'सेव्वली' के गुलाबी और 'मोरकां की फली' के सफेद फूल राहगीरों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे। परमाराध्य आचार्यप्रवर लगभग १२ कि.मी. का विहार कर मायानूर में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी के भीतर अनेक प्रकार के भाव उभरते हैं। सद्भाव भी उभर सकते हैं और दुर्भाव भी उभर सकते हैं। दुर्भावग्रस्त आदमी अपराधों, पापों में प्रवृत्त हो सकता है और सद्भावग्रस्त आदमी अच्छे कार्यों में प्रवृत्त हो सकता है। व्यक्ति के भीतर कभी अहिंसा का भाव उभरता है और कभी हिंसा का भाव आ जाता है। कभी गुस्से का भाव तो कभी सहिष्णुता का भाव आता है। कभी मान का भाव और कभी नम्रता का भाव आ जाता है। कभी

माया का भाव तो कभी ऋजुता का भाव उभर जाता है। कभी लोभ परेशान करता है तो कभी अलोभ, संतोष की चेतना जागृत हो जाती है। इस प्रकार अनेक विरोधी भाव आदमी के भीतर पैदा हो सकते हैं।

अनेक भावों में एक है--अनुकंपा। दया का भाव आदमी को हिंसा से बचाने वाला और परोपकार में प्रवृत्त करने वाला हो सकता है। आदमी में करुणा होती है तो वह ऐसा प्रयास कर सकता है कि उसकी ओर से किसी को कष्ट न हो। वह दूसरों को कल्याण के पथ पर स्थापित करने का यथासंभव प्रयास कर सकता है, चित्त समाधि पहुंचाने का प्रयत्न कर सकता है।

दया पापों से बचाने वाला रक्षाकवच होता है। वह संसार समुद्र से पार पहुंचाने वाली नौका है। आदमी यह ध्यान रखे कि अपने कारण से किसी अन्य प्राणी को अनपेक्षित कष्ट न हो। सूक्ष्म प्राणियों के प्रति भी अहिंसा, दया का भाव रहना चाहिए। स्नान आदि में पानी का संयम किया जाए तो उससे अहिंसा व दया की साधना भी हो सकती है। कमरे में कोई न हो तो वहां अनावश्यक पंखा चलता क्यों रहे। इस प्रकार गृहस्थ को अहिंसा पर सूक्ष्मतया ध्यान देना चाहिए। दया आदमी को सुगति की ओर ले जाने वाली हो सकती है। किसी को दुःखी देखकर खुशी नहीं मनानी चाहिए।'

मध्याह्न में विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों आदि ने पूज्यप्रवर के निकटता से दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर का प्रवास जिन-जिन विद्यालयों में होता है, वहां यदि विद्यार्थी, शिक्षक आदि उपस्थित रहते हैं तो उन्हें पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार प्रेरणा देने और कुछ ध्यान आदि के प्रयोग सिखाने का भी उपक्रम रहता है। इस दृष्टि से पूज्यप्रवर की इस तमिलनाडु यात्रा में तमिल भाषा के विज्ञ साधु-साध्वियों का अच्छा उपयोग हो रहा है। तमिलभाषी अन्य ग्रामीणों को भी यथावसर पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार तमिल भाषा में उत्प्रेरित किया जाता है।

सायंकालीन आहार के पश्चात् पूज्यप्रवर मायानूर से मानावासी के लिए प्रस्थित हुए। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आज का सायंकालीन विहार नहीं रखा हुआ था, किन्तु स्थान की असुलभता के कारण कल के गंतव्य स्थल की संभावित अधिक दूरी के मद्देनजर सायंकालीन विहार निश्चित किया गया और कुछ ही समय बाद पूज्यप्रवर ने प्रस्थान भी कर दिया। विहार के प्रारम्भ में धूप कड़ी थी, किन्तु अस्ताचलगामी सूर्य ज्यों-ज्यों ढलता गया, त्यों-त्यों उसकी तीव्रता भी कम हो गई। पूज्यप्रवर करीब ३.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर मानावासी में स्थित पंचायत यूनियन मिडिल स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

पूज्यप्रवर का प्रवास जिस विद्यालय में हो रहा था, उसके समीप किन्नरों की एक बस्ती भी थी। रात्रि में कई किन्नर पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। उन्होंने पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीष प्राप्त की। बताया गया कि वह बस्ती सरकार द्वारा बसाई गई है। अन्य अनेक ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

पहले जानें, फिर छोड़ें

२५ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः मानावासी से गांधीग्रामम की ओर प्रस्थान किया। विहार के प्रारम्भ में बादलों के कारण तेजस्वितावीहीन प्रतीत होने वाली धूप ने विहार के अंत तक कड़ा रूप धारण कर लिया, किन्तु पूज्यप्रवर का समत्वभाव दोनों स्थितियों से अप्रभावित रहा। मार्गस्थ वडम्कपालयम के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। विहार पथ के आसपास आम, नारियल, सेवक्काई आदि के वृक्ष प्रचुरता लिए हुए थे।

इस क्षेत्र के बैलों को देखकर अनायास नागौरी बैलों की स्मृति हो जाती है। हृष्ट-पुष्ट शरीर तथा बड़े और मोटे सींग इन बैलों को नागौरी बैलों से मिलता-जुलता रूप प्रदान किए हुए प्रतीत हुए। प्रायः बैलों के सींग विभिन्न रंगों से रंगे हुए दिखाई देते हैं।

पूज्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार कर गांधीग्रामम स्थित लार्डस पार्क मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। मुख्य द्वार पर विद्यालय के ऑनर श्री जयकुमरेसन सपरिवार तथा प्रिंसिपल श्री उमाचन्द्रन व विद्यार्थियों के साथ पूज्यप्रवर की अगवानी में उपस्थित थे। उन्होंने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। शास्त्रकार ने कहा पहले ज्ञान, फिर दया (आचरण)। ज्ञानपूर्वक किया जाने वाला कार्य ठीक हो सकता है। जिसे करने का तरीका ही नहीं आता, वह कार्य गड़बड़ या गलत भी हो सकता है। अध्यात्म के क्षेत्र में भी ज्ञान का बहुत महत्त्व है। यथार्थ बोध सम्यक् ज्ञान होता है। वह ज्ञान और भी महत्त्वपूर्ण है, जो आदमी को मोक्ष की ओर बढ़ाने में सहयोग करता है। हिंसा-अहिंसा का ज्ञान कर आदमी को हिंसा को छोड़ना चाहिए और अहिंसा को आत्मसात करना चाहिए। दो परिज्ञाएं हैं-ज्ञ परिज्ञा और प्रत्याख्यान परिज्ञा। जानना 'ज्ञ' परिज्ञा और पाप को छोड़ना 'प्रत्याख्यान' परिज्ञा होती है। ज्ञान और आचार दोनों होते हैं तो जीवन में परिपूर्णता आ सकती है।

विद्या संस्थानों में कितने-कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं। उन्हें भूगोल, खगोल, गणित, सामाजिक ज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल आदि कितने-कितने विषय और भाषाएं पढ़ाई जाती होंगी। इस ज्ञान का भी बहुत महत्त्व है। इसके साथ-साथ विद्यार्थियों को अध्यात्म विद्या का भी कुछ-कुछ ज्ञान मिलना चाहिए। विद्यार्थियों को अन्य ज्ञान के साथ अहिंसा, नैतिकता, विनय आदि का बोध और सत्संस्कार प्रदान करने का प्रयास भी किया जाए तो उनका ज्ञानात्मक और आचारणात्मक व्यक्तित्व निर्मित हो सकता है। इन दोनों की संयुति से विद्यार्थियों का संपूर्ण व्यक्तित्व निर्मित हो सकता है।

अज्ञान तो अपने आप में अभिशाप है। अज्ञान के कारण आदमी अपने हित-अहित को जान नहीं पाता। इसलिए अज्ञान को दूर करने का प्रयत्न होना चाहिए। तत्त्व की भाषा में बताऊं तो ज्ञानावरणीय और मोहनीय--इन दोनों कर्मों का क्षयोपशम होना चाहिए। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से मूर्खता दूर होती है और मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से मूढ़ता दूर होती है। विद्या संस्थानों के माध्यम से मूर्खता तो दूर करने का प्रयास होना ही चाहिए, उसके साथ मूढ़ता को भी दूर करने का प्रयास हो तो विद्या संस्थान अपने आप में कितने सुफल हो सकते हैं।

ज्ञान का महत्त्व है। उसके साथ चरित्र, आचार का भी महत्त्व है। ज्ञान को जीवन में क्रियान्वित करने से पूरी निष्पत्ति की बात हो सकती है। धर्मग्रंथों में कितनी-कितनी ज्ञानराशि भरी हुई है, किन्तु धर्मशास्त्र पड़े रहेंगे तो वे व्यक्ति का क्या कल्याण करेंगे। व्यक्ति उन्हें पढकर अच्छी बातों को जीवन में उतारेगा तो उसका कल्याण हो सकेगा। ग्रंथ, पंथ और संत कल्याणकारी तभी हो सकते हैं, जब उनकी अच्छी बातों के अनुरूप आचरण किया जाए।'

पूज्यप्रवर के पदार्पण से विद्यालय के ऑनर श्री जयकुमरेसन तथा विद्यालय के प्रिंसिपल, शिक्षक आदि अतिशय आह्लादित थे। वे लोग प्रायः दिन भर पूज्यप्रवर के आसपास रहे। अपने कई ज्ञातिजनों, मित्रों और परिचितों को भी बुलाकर उन्होंने पूज्यप्रवर के दर्शन करवाए।

सायंकालीन आहार के उपरान्त परमाराध्य आचार्यप्रवर गांधीग्रामम से करूर की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग

में थीरूमणिलयूर के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। बादलों के कारण सूर्य का आतप मंद-सा बना हुआ था। पूज्यप्रवर करूर शहर के मध्य से गतिमान थे। मार्ग के दोनों ओर सैंकड़ों दुकाने आदि थीं, जो अंधेरे की आहट के साथ कृत्रिम रोशनी से जगमगा उठीं। विशाल दुकानों, शोरूम्स, होटल्स आदि की वजह से यह शहर और भी भव्य नजर आ रहा था। कई लोग अपने-अपने घरों की ओर लौट रहे थे, इस कारण यातायात भी अधिक था।

करूर शहर 'कुटीर उद्योग' (घर में बनाई गई वस्तुओं का व्यापार) के लिए प्रसिद्ध है। यहां से उन वस्तुओं का निर्यात भी होता है। करूर अमरावती नदी के तट पर स्थित है। उस नदी के स्थान से पहले रेत भी खूब निकाली जाती थी। बताया गया कि प्रतिदिन करीब ६००० ट्रक रेत का क्रय-विक्रय होता था। इससे होने वाली हानि को देखते हुए सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया, किन्तु उसके बाद से 'सेंड माफिया' से जुड़े हुए लोग सक्रिय हैं। आज भी अवैध रूप से रेत का व्यापार होता है।

आचार्यप्रवर लगभग ७.३ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर करूर में स्थित जयराम विद्या भवन हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के ऑनर श्री आर. रामास्वामी व प्रिंसिपल श्री रमेश कुमार ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। विद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों में पूज्यप्रवर के दर्शन की ललक स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

दूसरों के कल्याण में हो समय का नियोजन

२६ जनवरी। भारत का गणतंत्र दिवस। प्रातःकाल से ही देशभक्ति के गीत वातावरण में गुंजायमान होने लगे। गणतंत्र दिवस के अवकाश के कारण सेवार्थी श्रद्धालुओं की संख्या अन्य दिनों की अपेक्षा कुछ ज्यादा थी। आचार्यप्रवर करीब ७.५ का विहार सम्पन्न कर मत्तुचोलिपालयम में स्थित आउरा फैशन होम प्राइवेट लिमिटेड में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। श्री ईश्वरमूर्ति ने अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान में आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में समय एक ऐसी चीज है, जो हमें प्रकृति से प्राप्त होती है। गरीब हो या अमीर, राजा हो या रंक सबको एक समान समय मिलता है। आदमी के लिए यह विचारणीय है कि वह प्राप्त समय का क्या उपयोग करता है। बादल पानी बरसाता है, कौन व्यक्ति उसका क्या उपयोग करता है या उसे किस रूप में ग्रहण करता है, यह ध्यातव्य बात होती है। बरसात का पानी कुण्ड में संरक्षित किया जा सकता है और गन्दी नाली में भी जा सकता है। कोई उससे स्नान कर सकता है तो कोई उसे पीने के कार्य में ले सकता है।

इसी प्रकार समय का आदमी क्या उपयोग करता है, यह चिन्तनीय है। आदमी का समय किसी को दुःख देने, डराने आदि में प्रयुक्त न हो। उसका समय दूसरों का कल्याण करने में नियोजित हो, यह काम्य है। आदमी का समय हिंसा, व्यसन आदि में लग जाता है या आलस्य में बीत जाता है तो यह समय उसके लिए अच्छा नहीं होता। दूसरों को परेशान करने में व्यक्ति का समय नहीं लगना चाहिए। अध्यात्म की व्यक्तिगत साधना और परकल्याण में जो समय लगता है, वह समय सुफल होता है। जो समय बीत गया, वह वापस नहीं आता। इसलिए उसे पीछे से नहीं, आगे से पकड़ने का प्रयत्न करना चाहिए तथा उसका सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।'

आउरा फैशन होम प्राइवेट लिमिटेड के ऑनर श्री ईश्वरमूर्ति अपने प्रतिष्ठान में पूज्यप्रवर के पदार्पण और प्रवास से हर्ष विभोर बने हुए थे। उन्होंने अपने परिवार को भी पूज्यप्रवर के दर्शन करवाए। उन्होंने और

उनके पिता ने पूज्यप्रवर से मांसाहार को छोड़ने का संकल्प भी ग्रहण किया। कम्पनी से जुड़े स्टाफ आदि लोगों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

आस्तिक दर्शन का सशक्त सिद्धान्त है पुनर्जन्मवाद

२७ जनवरी। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः मत्तुचोलिपालयम से के. पारमती के लिए प्रस्थान किया। रविवार के कारण तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों के लोग अच्छी संख्या में उपस्थित थे। विहार के दौरान पुदुकेमाली के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। करीब १०.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर के. पारमती गांव में पधारे। गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में आज सायं तक का प्रवास हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में दो तत्त्व हैं--चेतन और जड़। इन दो के सिवाय दुनिया कुछ भी नहीं है। चेतन और जड़ को दूसरे शब्दों में जीव और अजीव भी कहा जा सकता है। जीव और अजीव दोनों शाश्वत तत्त्व हैं। आत्मा कभी अनात्मा नहीं बनती। आत्मा और शरीर का वियोग हो सकता है, किन्तु आत्मा का नाश कभी नहीं किया जा सकता। आत्मा अदाह्य, अक्लेद्य, अशोष्य है। आत्मा इन्द्रियों का विषय नहीं होती।

पुनर्जन्मवाद आस्तिक दर्शन का एक सशक्त सिद्धांत है। प्रत्येक आत्मा ने अतीत में अनंत-अनंत जन्म ग्रहण कर लिए। अगले जन्म को अच्छा रखने के लिए पापाचरण से बचने और धर्म की साधना करने का प्रयत्न करना चाहिए।'

करीब पांच वर्षों बाद साध्वी सुदर्शनाश्रीजी आदि साध्वियों ने आज परम पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन किए। अपने आराध्य के प्रत्यक्ष आभामंडल में पहुंचकर साध्वियां हर्षविभोर थीं। कार्यक्रम के दौरान साध्वी प्रगतिप्रभाजी ने अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। साध्वी सुदर्शनाश्रीजी ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत के संगान के माध्यम से पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की।

पूज्प्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'साध्वी सुदर्शनाश्रीजी करीब पांच वर्षों के अंतराल के बाद पहुंची हैं। चेन्नई चतुर्मास के बाद पहला बहिर्विहारी सिंघाड़ा गुरुकुलवास में पहुंचा है। खूब अच्छा कार्य होता रहे।'

सायंकालीन आहार के उपरान्त पूज्यप्रवर के.पारमती से तेन्नीलई की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में सेल्लीपुरम, करयपालयम और मलिकोवलि में अच्छी संख्या में खड़े ग्रामीण दर्शनार्थियों पर पूज्यप्रवर ने आशीषवृष्टि की। आचार्यप्रवर के निर्देश पर सेल्लीपरम के ग्रामीणों को तमिल भाषा में प्रेरणा दी गई। करीब ७.३ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर पूज्यप्रवर तेन्नीलई में पधारे। गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

मन, वाणी और शरीर पर रहे संयम की लगाम

२८ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः तेन्नीलई से वेल्लाकोविल की ओर प्रस्थित हुए। विहार के दौरान हल्के बादल आसमान में छाए हुए थे। इस कारण सूर्य अदृश्य-सा बना हुआ था। पूज्यप्रवर द्वारा करीब आठ कि.मी. की दूरी तय करने के उपरान्त सूर्य अपनी तेजस्विता के साथ दृश्यमान हुआ। उसकी प्रखरता से ऐसा महसूस हो रहा था, मानों ज्येष्ठ मास का समय हो। हालांकि प्रखर सूर्य किरणें ज्यादा समय तक आतप नहीं बरसा सकीं, क्योंकि बादलों ने उन्हें पुनः अवरुद्ध कर दिया।

आज के विहार मार्ग में चींटियां बहुत थीं, इस कारण पूज्यप्रवर की गति कुछ मंद बनी हुई थी। 'चीटिंया हैं'--पूज्यप्रवर और मुनिवृंद के मुख से उच्चरित होने वाला यह स्वर सबको हिंसा से बचने के लिए सचेत

बना रहा था। तिन्नीमलै में मार्ग के समीप कार्यरत मजदूर लोगों ने आचार्यप्रवर को साष्टांग वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उन्हें पावन आशीष प्रदान की। पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह में अभिस्नात उन मजदूरों के चेहरों पर खुशी और तृप्ति के भाव उभरते हुए दिखाई दे रहे थे। मार्गवर्ती कुरुकठी के ग्रामीणों ने भी पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

आचार्यप्रवर १०.८ कि.मी. का विहार करने के उपरान्त वेल्लाकोविल में स्थित जयम विद्या भवन मैट्रिक हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। ऑनर श्री कुप्पुस्वामी, प्रिंसिपल श्री पुगलेन्द्रन, शिक्षक, विद्यार्थियों आदि ने कलश, नारियल, आरती के थाल आदि के साथ पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में शरीर का महत्त्व है, वाणी का भी महत्त्व है और मन का भी महत्त्व है। शरीर, वाणी और मन पर संयम की लगाम रहती है तो वे हमारे लिए हितावह हो जाते हैं। मन कई बार समस्याभूत भी बन सकता है। आदमी स्वयं के मन से ही कभी परेशान हो जाता है और कभी वह बहुत खुश हो जाता है। उसे अपने मन का संयम करना चाहिए। दुःख का एक कारण है--मन। असंयमित मन से दुःख बढ़ते हैं। मन को वश में कर लिया जाए तो दुःख नष्ट हो सकते हैं। चिन्तन से आदमी दुःखी बन सकता है और चिन्तन से वह सुखी हो सकता है।

शरीर से जो पाप होते हैं, उनका तो प्रायश्चित्त ग्रहण किया जाता है, वाणी का भी किया जाता है। मन के प्रमाद का प्रायश्चित्त उस रूप में न भी लिया जाए, किन्तु वह शुद्ध रहे, ऐसा प्रयास वांछनीय है। मन अच्छे संकल्पों वाला रहना चाहिए। अच्छे संकल्प दृढ़ रूप में हों तो खराब संकल्प पैदा ही नहीं होते।

जिन्दगी में कठिनाइयां आ सकती हैं। विरोधों में भी मन को शांत रखना अच्छी बात होती है। प्रतिकूल स्थिति में भी न गुस्सा आए, न प्रतिशोध की भावना जगे और न ही दुःखी बनें, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के दौरान अर्हतवन्दना, प्रतिक्रमण, ईर्या समिति आदि के विषय में भी प्रेरणा प्रदान की। प्रवचन के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि अर्हत वन्दना के विषय में गुरुदेव तुलसी का एक गीत है। पूज्यप्रवर ने उसे प्रस्तुत करने की स्वीकृति प्रदान की तो साध्वी मैत्रीयशाजी ने 'अर्हत वन्दना करो' गीत का संगान किया। आचार्यप्रवर ने प्रवचन से पूर्व समुपस्थित विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा में संबोधित किया।

विद्यालय के प्रिंसिपल श्री पुगलेन्द्रन ने कहा--'आज का दिन हम सभी के लिए और समस्त विद्यार्थियों के लिए उज्ज्वलता का दिन है। हमारे विद्यालय में आचार्यश्री महाश्रमणजी तीन उद्देश्यों को लेकर आए हैं। तीनों उद्देश्य आज के दौर में बहुत ही प्रासंगिक हैं। गुरुजी को हम लोगों से किसी चीज की अपेक्षा नहीं, उनका उद्देश्य केवल हर मानव का कल्याण है। आचार्यश्री किसी भगवान से कम नहीं हैं। आपके पदार्पण के प्रताप से आने वाले समय में हमारे स्कूल की उन्नति ही होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। आपकी आगे की यात्रा मंगलमय हो। हम सभी को आप अपना मंगल आशीष प्रदान करते रहें।'

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यालय के ऑनर, शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों ने पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

पूज्यप्रवर के पदार्पण और प्रवास से विद्यालय परिसर में उत्सव का वातावरण था। ऑनर श्री कुप्पुस्वामी व प्रिंसिपल श्री पुगलेन्द्रन तो एक भक्त की भांति पूज्यप्रवर की सेवा में लगे हुए थे। आचार्यप्रवर के प्रति उनकी श्रद्धा उनकी भावभंगिमा पर साकार बनी हुई थी। कार्यकर्ताओं ने बताया कि पूज्यप्रवर की यात्रा के

पड़ावों के निर्धारण आदि में भी उनका बहुत सहयोग रहा है। उन्होंने अपने परिजनों, सम्बन्धियों, मित्रों, परिचितों आदि को भी बुलाकर पूज्यप्रवर के दर्शन करवाए। दिन-रात में सैंकड़ों लोग आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मीडिया से जुड़े हुए कई लोग भी श्री कुप्पुस्वामी के निमंत्रण पर पहुंचे और अहिंसा यात्रा आदि के विषय में जानकारी संकलित की। तमिलनाडु के पूर्व मंत्री दुरईरामस्वामी के पुत्र श्री वी.आर. सुदर्शन आदि ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन पथदर्शन प्रदान किया।

शासनश्री साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी (सिसाय) की स्मृति सभा

गत २४ जनवरी को जाखलमण्डी (हरियाणा) में शासनश्री साध्वीश्री उज्ज्वलकुमारीजी (सिसाय) का प्रयाण हो गया। आज के कार्यक्रम में उनकी स्मृतिसभा का उपक्रम रहा। उनके विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी संसारपक्ष में सिसाय के अग्रवाल परिवार से संबद्ध थीं। करीब उन्नीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से साध्वी दीक्षा ग्रहण कीं। साध्वी गौरांजी के साथ वे करीब चालीस वर्षों तक रहीं, उस दौरान उन्होंने भारत के विभिन्न प्रान्तों की यात्रा की। विक्रम संवत २०५४ में परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने उन्हें अग्रणी के रूप में नियुक्त किया। मैंने गत वर्ष कटक मर्यादा महोत्सव के अवसर पर उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया। वे जाखलमंडी में प्रवास कर रही थीं। उनके स्वास्थ्य में कुछ कठिनाई की बात ज्ञात हुई कि उनके श्वास में दिक्कत है। विक्रम संवत २०७५ माघ कृष्णा तृतीया तदनुसार २४ जनवरी २०१९ को रात्रि करीब १.५० बजे उनका प्रयाण हो गया।

उनके साथ तीन साध्वियां सहवर्ती के रूप में थीं। वे तीनों साध्वियां खूब चित्त समाधि में रहें, स्वास्थ्य का ध्यान रखें और यथासंभव खूब अच्छा कार्य करें। सुन्दर पारस्परिकता बनी रहे। अग्रणी के जाने से कुछ रिक्तता की अनुभूति हो सकती है, किन्तु हम तो अनगार हैं। हमें मोह को नियंत्रित करने का प्रयत्न करना चाहिए। छद्‌मस्थता के कारण कुछ मानसिक आघात लग सकता है। तीनों साध्वियां मानसिक समाधि बनाए रखने का प्रयास करें। साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी की आत्मा परम की ओर गति करती रहे।'

साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी की स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया गया।

इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'शासनश्री साध्वीश्री उज्ज्वलकुमारीजी ने दीक्षा से पूर्व पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रहकर अध्ययन किया तो करीब एक वर्ष तक मुझे भी उनके साथ रहने का अवसर मिला था। उनमें सहजता, सरलता और विन्रमता थी। इसी कारण वे साध्वी गौरांजी के साथ चार दशकों तक रह पाईं। क्योंकि साध्वी गौरांजी एक दाठीक साध्वी थीं, उनके पास रहना आसान नहीं था, किन्तु साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी उनके पास जमकर रहीं। उनकी हिन्दी भाषा भी अच्छी थी। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने उन्हें अग्रगण्य बनाया। उसके बाद कुछ वर्षों तक उन्होंने विहरण किया। फिर वे कुछ अस्वस्थ रहने लगीं। उन्हें चिंता थी कि मेरी अस्वस्थता में मेरी निभेगी कैसे? किन्तु गुरु सबको निभाते हैं। कहा गया है--

गुरु के आसरे पर डाल दी जब नाव तूफां में,
उतर आता है साहिल जहां साहिल नहीं होता।

साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी को गुरुकृपा से ऐसी साध्वियां मिल गईं, जो उनकी सेवा करती रहीं, उन्हें चित्त समाधि पहुंचाती रहीं। साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी ने अंत में समाधिपूर्वक अपनी जीवन यात्रा सम्पन्न की। उनका आध्यात्मिक विकास उत्तरोत्तर होता रहे, उनके प्रति यही मंगलकामना।'

अतीत से प्रेरणा लें, भविष्य की योजना बनाएं और वर्तमान में अच्छा कार्य करें

२६ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः वेल्लाकोविल से ओलापालयम की ओर प्रस्थान किया। जयम विद्या भवन मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल के ऑनर श्री कुप्पुस्वामी तथा प्रिंसिपल श्री पुगलेन्द्रन प्रातः पांच बजे के आसपास ही पूज्य सन्निधि में पहुंच गए थे। उन्होंने पूज्यप्रवर के प्रति अपने भक्तिपूर्ण कृतज्ञ भाव अर्पित किए। आसमान में छाए बादलों और शीतल हवा के कारण मौसम सुहावना रूप धारण किए हुए था। मार्ग में वेल्लाकोविल, सेनापतिपालियम के ग्राम्यजन पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। वेल्लाकोविल के एक मूर्तिपूजक परिवार ने पूज्यप्रवर को मार्ग से भीतर स्थित मकान में पधारने की पुरजोर प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने उस परिवार को मार्ग से ही मुंगलपाठ सुनाया। सेनापतिपालयम में श्री दुरै नामक एक तमिल व्यक्ति ने अपनी होटल अमान के निकट अपने परिवार व होटल स्टाफ के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने पूज्यप्रवर से नींबू, चाय, कॉफी आदि ग्रहण करने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने उन्हें शराब आदि नशीली वस्तुओं से मुक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने विहार के दौरान करूर जिले से तिरुपुर जिले की सीमा में प्रवेश किया। वेलापाडै में एक ग्रामीण ने पूज्यप्रवर को दूध का दान देने की भावना व्यक्त की। आचार्यप्रवर ने उसे भी पावन आशीष प्रदान की।

आचार्यप्रवर की अगवानी में ओलापालयम के ग्रामीण एवं विद्यार्थी काफी दूर तक पहुंचे हुए थे। पूज्यप्रवर के निकट पधारते ही उनमें और अधिक उत्साह का संचार हो गया। हाथों में कलश, आदि लिए मंदिर के पंडितों ने वेदमंत्रों के द्वारा पूज्यप्रवर को वर्धापित किया। करबद्ध और कतारबद्ध खड़े छात्र-छात्राएं व शिक्षक 'वन्दे गुरुवरम्' की लयबद्ध ध्वनि से पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर रहे थे। ग्राम्यजन 'ढोल' के तुमुल नाद से अपनी खुशी को व्यक्त करते हुए मानों सबको पूज्यप्रवर के पदार्पण की सूचना दे रहे थे। लगभग ११.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर ओलापालयम में स्थित भारत मैट्रिकुलेशन स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के ऑनर श्री शिव सुब्रह्मण्यम ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर के पदार्पण से प्रसूत हुआ उनका आन्तरिक उल्लास उनकी मुखमुद्रा पर प्रसन्नता के रूप में थिरकता हुआ-सा दिखाई दे रहा था।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जगत में काल और क्षेत्र--ये दोनों किसी भी घटना के घटने के लिए अनिवार्य स्थितियां हैं। काल और क्षेत्र के बिना कोई घटना घटित नहीं हो सकती। काल के तीन प्रकार होते हैं--अतीत, अनागत और वर्तमान। जो समय बीत चुका है, वह अतीत है, जो बीत रहा है, वह वर्तमान है, जो समय अभी तक आया नहीं, वह अनागत है। अतीत अनंत है, अनागत भी अनंत है, किन्तु वर्तमान बहुत ही छोटा समय होता है। छोटा होने पर भी वर्तमान किसी दृष्टि से ज्यादा उपयोगी होता है।

अतीत से प्रेरणा ली जा सकती है और अनागत की योजना बनाई जा सकती है, किन्तु वर्तमान में अच्छा कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को वर्तमान में रहने का प्रयास करना चाहिए। अतीत की बुरी बातों को याद कर दुःखी नहीं बनना चाहिए और अनागत की कल्पना कर चिन्ताग्रस्त नहीं बनना चाहिए।

जो समय बीत जाता है, वह लौटता नहीं है। समय को रोकना किसी के हाथ की बात नहीं होती। वह एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उसका सदुपयोग करने का प्रयत्न करना चाहिए। दुनिया का अच्छा आदमी वह होता है जो अपने समय का उपयोग अच्छे कार्यों में करता है। बुरा आदमी वह होता है, जो अपने समय का उपयोग

बुरे कार्यों में करता है। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि उसका समय महत्त्वपूर्ण कार्यों में व्यतीत हो। महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाला व्यक्ति महान बन जाता है। दुनिया में जितने भी महापुरुष बने, उन्होंने समय का अच्छा उपयोग किया, जो व्यक्ति अपने समय का उपयोग परकल्याण में करता है, वह महापुरुष बन सकता है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त समुपस्थित विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा में पावन प्रेरणा प्रदान की।

भारत स्कूल के ऑनर श्री शिव सुब्रह्मण्यम ने कहा--'आज हमारे भाग्य का उदय हुआ है, जो हमारे स्कूल में आध्यात्मिक जगत के महान गुरु आचार्यश्री महाश्रमणजी का शुभागमन हुआ है। आपका प्रवचन सुनकर मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि आपके उपदेश सबका कल्याण करने वाले हैं। आदमी जन्म लेता है, अपना काम करता है और चला जाता है, लेकिन आप जिस रूप में दूसरों की सेवा करने और परोपकार करने के लिए गांव-गांव पैदल जा रहे हैं, ऐसा मसीहा आज की दुनिया में मिलना मुश्किल है। विनाश की ओर बढ़ती दुनिया की दिशा बदलने की क्षमता आपकी अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों में है। हम परम सौभाग्यशाली हैं, जो आपके चरण हमारे विद्यालय में पड़े। मैं समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों और अपने परिवार की ओर आपका अनंत-अनंत स्वागत करता हूं।' उन्होंने तमिल भाषा में विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प भी स्वीकार करवाए।

सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यप्रवर ओलापालयम से कांगेयम की ओर प्रस्थित हुए। भारत मैट्रिकुलेशन स्कूल के ऑनर श्री शिव सुब्रह्मण्यम ने पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। ओलापालयम और रेडिवलाड के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। मार्ग के परिपार्श्वस्थ कुछ फेक्ट्रियों के कर्मचारियों को भी विहार के दौरान आचार्यप्रवर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विहार पथ के समीप स्थित आंवलों के बगीचों में पेड़ों पर लगे हुए आंवले आचार्यप्रवर की दृष्टि के भी विषय बने। कुछ जगह नारियल के पेड़ों की ऊंचाई इतनी कम थी कि जमीन पर खड़े-खड़े कोई व्यक्ति उन नारियलों को छू सके। पूज्यप्रवर करीब ८.० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर कांगेयम में स्थित श्री महाराजा महल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को भेंट

५१०००/- जीतमल दीपक बच्छावत, पिंपरी चिंचवड़, पूणे-सरदारशहर।
५१०००/- स्व. उत्तमचंदजी बच्छावत (सरदारशहर-गुलाबबाग-पिंपरी चिंचवड़, पूणे) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी राजमतीदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू पंकज-सीमा बच्छावत।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार के लिए पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, ३ पोर्चुगीज चर्च स्टीट, कोलकाता ७०० ००१
मो. नं. ७०४४७७८८८८ Email : vigyapti@terapanthinfo.com

आनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाइल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला